Q. प्राचीन मिस्र में पुरोहित वर्ग की भूमिका / मिस्र में पुरोहित वर्ग के उत्कर्ष के लिए उत्तरदायी कारक तत्वों का विश्लेषण करें ?

Ans ⟹ आरंभ में मिस्रवासी व्यक्तिगत अनहोनी एवं उपासना में विश्वास करते थे, किन्तु बाद में धार्मिक अनुष्ठान एवं प्रक्रिया में जटिलता आती गई, फलस्वरूप व्यक्तिगत उपासना की प्रक्रिया धीमी पड़ती गई। इस जटिल प्रक्रिया के अनुष्ठान को सही ढंग से कार्यरूप देने के लिए समाज के पुरोहित का उदय हुआ जो पुरोहित वर्ग के नाम से जाना गया।

राजकीय संरक्षण एवं दान के कारण इस वर्ग की स्थिति मजबूत होती गई और अब इनका प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्रों पर ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों पर भी बढ़ने लगा। एक ऐसा भी समय आया जब एमन का बड़ा पुजारी हिहोर (Herihor) ने पुरोहित वर्ग का शासन स्थापित किया और स्वयं फराओ बन बैठा। यह राजवंश मिस्र के इतिहास में 21 वें राजवंश के नाम से जाना गया।

इस काल में मिस्र के विभिन्न प्रमुख नगर थीब्स, कार्नाक, लक्सर, मेम्फिस, गीजे आदि भव्य एवं आकर्षक मंदिरों से भर गये। वस्तुतः प्रबल धार्मिक भावना के कारण मिस्र मंदिरों का देश बन गया। इन मंदिरों के संचालन का विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन एवं निष्पादन के लिए पुरोहित वर्ग का उदय स्वाभाविक था।

मिस्रवासी कट्टर धार्मिकता के समर्थक एवं असंख्य देवी-देवताओं के उपासक थे। अपनी पूजा पद्धति में वे पुरोहितों को देवता एवं भक्तों के बीच आवश्यक कड़ी के रूप में देखते थे। उनका असीम विश्वास था कि पुरोहित वर्ग अपने मंत्रों एवं चमत्कारों के द्वारा देवताओं से संपर्क करते हैं और मुक्ति तथा स्वर्ग प्राप्ति में सहायक होते हैं। मिस्रवासियों के इस धार्मिक अंधविश्वास का चतुर पुरोहितों भरपूर लाभ उठाया।

Date : / /200

अब साधारण लोग पुरोहितों के बिना धार्मिक अनुष्ठान करने में असमर्थ हो गए और नरक के भीषण कष्ट से उबरने के लिए वे पूर्णरूपेण पुरोहितों पर आश्रित हो गए। धार्मिक अनुष्ठान के होने वाले बलि-चढ़ावा आदि से पुरोहित की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती गई और उन्होंने राजनीतिक व सामाजिक गतिविधियों में भी रुचि लेना आरम्भ कर दिया।

मिस्र में पुरोहित वर्ग के उदय के लिए उपयुक्त अवसर भी विद्यमान था। पिरामिड से लेकर साम्राज्य युग तक प्रायः सभी फराओ ने धर्म को अतिशय महत्व दिया। हर एक राजवंश के काल में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ जो आगे चलकर राजनीतिक सत्ता के केन्द्र बन गये। धार्मिक अनुदान के स्थान नहीं अखनातन ही एकमात्र शासक था जिसने अकेश्वरवादी आडम्बरपूर्ण धर्म तथा अकर्मण्य पुरोहित वर्ग के नेतृत्व को समाप्त करने का प्रयास किया परंतु समय से आगे होने के कारण उसकी यह महान धार्मिक क्रांति असफल हो गयी इससे पुरोहित वर्ग को काफी लाभ हुआ। एमन के समर्थक अत्यंत संगठित हो गए और उसकी राजनीतिक महत्ता बढ़ गई।

18 वें और 19 वें राजवंश के शासन काल में पुरोहितो ने इतनी शक्ति बढ़ा ली कि जनमानस के अलावा फराओ और मंत्री भी उसकी शक्ति से भयभीत रहने लगे। थीब्स का प्रधान पुरोहित जो राज्य का सबसे प्रधान पुरोहित था एमन की शक्ति का एकमात्र अधिष्ठाता बन बैठा। पुरोहितों की अत्यधिक बढ़ती शक्ति को देख कुछ फराओ ने ईर्ष्यावश धार्मिक शक्ति को भी अपने में समन्वित करने का प्रयास किया।

लेकिन अधिकांश फराओं ने प्रधान पुरोहितो से टकराने की नीति नहीं स्वीकार की, क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि उनके वंशजों

को मिस्र की अराजक स्थिति से उबारने तथा उनके फराओ पद दिलाने का पूरा श्रेय पुरोहित वर्ग को ही था। ऐसी स्थिति में पुरोहित वर्ग की शक्ति का असीमित विकास कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी

18 वें राजवंश के फराओं थुटमोस III की धार्मिक नीति एवं अतिशय जनशीलता के कारण पुरोहित वर्ग की स्थिति और अच्छी हुई पुरोहितों की महत्वकांक्षा को थुटमोस III ने बढ़ाया और यह स्थिति उसके उत्कर्ष का महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि बन गई। थुटमोस III समझता था कि उसकी सफलता का सारा श्रेय एमन को ही है। अतः उसने कर्नाक में एमन का विशाल मंदिर बनवाया।

अमेनहोटप I का काल भी पुरोहितों के अभ्युदय के लिए महत्वपूर्ण है। इस समय निःसंदेह पुरोहित वर्ग के उत्कर्ष का दूसरा चरण आरंभ हुआ। इस राजवंश के साथ मिस्र के दोनों भागों में एमन का नाम अत्यंत श्रद्धा के साथ लिया जाने लगा और एमन मिस्र के प्रधान देवता के रूप में सम्मानित हुआ। थेबिस में एमन मंदिर का निर्माण हुआ जो जनसाधारण के उपासना का प्रमुख केन्द्र बन गया। मिस्र के साम्राज्य के साथ अब एमन की ना होकर अंतर्राष्ट्रीय हो गया। एमन की ख्याति के साथ ही अमेनहोटेप I के काल में पुरोहितों का सम्मान भी बढ़ गया।

रैमसेसों का काल भी पुरोहित वर्ग के उत्कर्ष के लिए प्रख्यात है। विशेषकर रैमसेस III का काल पुरोहित वर्ग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस समय की मुख्य विशेषता थी। पुरोहितों के कार्यक्षेत्र में वृद्धि। अब तक पुरोहित वर्ग धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में ही लगे रहते थे अब वे राजनीतिक कार्यों में भी हस्तक्षेप करने लगे। यह हस्तक्षेप पूर्णतया सफल था।

रमीस III ने मंदिरों के लिए जमीन तथा धनराशि प्रदान की। जिससे मंदिरों की आय और भी बढ़ गयी। पुरोहित वर्ग अब फराओं की श्रेणी में आ गया। मंदिरों एवं पुरोहितों के संचित धनराशि पर फराओ का न तो कर लग सकता था और न ही उन्हें विभिन्न प्रकार का दण्ड ही दिया जा सकता था। अब वे इतने शक्तिशाली हो गये कि उनकी परामर्श की उपेक्षा का मतलब था। फराओ पद के लिए संकट मोल लेना और कोई भी फराओ इसमें बुद्धिमानी नहीं समझता था।

रैमसेस तृतीय के उत्तराधिकारी पुरोहितों के हाथ की कठपुतली थी। रैमसेस 9वीं और 12वें तक का समय इसी प्रकार की शक्तिहीनता का युग था। जिसमें प्रधान पुरोहितों को अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने का उत्तम संयोग प्राप्त हुआ और 1100 B.C में प्रधान पुरोहित हिहोर (Heorihor) ने स्वयं को फराओ घोषित कर दिया। उसने मिस्र के दोनों भागों पर शासन करने का यश प्राप्त किया और अपने को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली बना लिया। उसने जिस राजवंश की स्थापना की वह धार्मिक मान्यताओं पर आधारित था।

Heorihor का शासनकाल रैमसेस III के समान प्रभावशाली नहीं था और उसकी मृत्यु जल्द ही हो गयी। उसका पुत्र पयोनेख (Payonekh) मिस्र का फराओ बना। उसके शासनकाल में पुरोहितों के दूसरे शाखा का उदय हुआ। जिसने उत्तर में तेनिस में अपनी राजधानी बनायी। उसके बाद Heorihor द्वारा स्थापित राजवंश पुनः अव्यवस्था एवं अराजकता का शिकार होगा और 22 वाँ राजवंश स्थापित हुआ।

इतिहास ब्रेस्टेड के अनुसार साम्राज्य युग में पुरोहितों की राजनीतिक शक्ति बढ़ गई थी, और उन्होंने सामाजिक जीवन को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करना प्रारंभ किया। वस्तुतः उन्होंने

मिस्र के सामाजिक एवं अनुप्राणित किया जिस प्रकार पादरियों ने ~~मध्यकालीन~~ राजनीतिक जीवन को उसी प्रकार प्रभावित किया एवं अनुप्राणित किया जिस प्रकार पादरियों ने मध्यकालीन यूरोप को ब्राह्मणों ने प्राचीन भारतीय समाज को तथा पुरोहित वर्ग ने प्राचीन बेबीलोन को।